भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान
रहमानखेड़ा, पो. काकोरी, लखनऊ–226 101 (भारत)
ICAR-Central Institute for Subtropical Horticulture
Rehmankhera, PO Kakori, Lucknow-226 101, U.P. (India)
Telephone : (O): 2841022, 2841023, 2841024; Fax : 0522-2841025
Web Site : www.cishlko.org; E-mail : cish.lucknow@gmail.com

Dated: 12. 02. 2016

पुष्प गुच्छ मिज की रोकथाम के लिए परामर्श

चित्रः पुष्प गुच्छ मिज की आम पर प्रकोप

आम का पुष्प गुच्छ मिज एक अत्यंत हानिकारक कीट है जो गंभीर अवस्था में आम की फसल को हानि पहुँचा है। मिज कीट का प्रकोप वैसे तो जनवरी माह के अन्त से जुलाई माह तक कोमल प्ररोह तनों एवं पत्तियों पर होता है, लेकिन सर्वाधिक क्षति बौर एवं नन्हें फलों पर इसके द्वारा की जाती है। इस कीट के लक्षण बौर के डंठल, पत्तियों की शिराओं या तने पर कत्थई या काले धब्बे के रूप में दिखाई देते है। धब्बे के मध्य भाग में छोटा सा छेद होता है। प्रभावित बौर व पत्तियों की आकृति टेढ़ी–मेढ़ी हो जाती है। प्रभावित स्थान से आगे के बौर सूख भी सकता है।

कुछ बागों में इस समय पुष्पगुच्छ मिज दिखने लगा हैं तथा विकसित हो रहे पुष्पगुच्छों पर क्षति करने लगा है। किसानों को सलाह दी जाती है कि इस कीट के नियंत्रण हेतु डायमेथोएट (30 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 2.0 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से तत्काल छिड़काव करें।

गुजिया कीट की रोकथाम के लिए परामर्श

यदि पौधे पर कीट चढना प्रारम्भ कर चुके हैं तथा कीट, बौर और पत्तियों तक पहुँच गयी हैं तो गुझिया कीट के प्रभावी नियन्त्रण हेतु कार्बोसल्फॉन (25 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 2.0 मिली. प्रति लीटर पानी या डायमेथोएट (30 प्रतिशत सक्रिय तत्व) 2.0 मिली. प्रति लीटर जल की दर से छिड़काव करें।

भुनगा कीट की रोकथाम के लिए परामर्श

कुछ बागों में इस समय भुनगा दिखने लगा हैं तथा पुष्पगुच्छों को नष्ट करने लगा है। इस समय तापमान बढ़ना शुरू हो गया है, अतः भुनगा की संख्या बढ़ने की संभावना है। यदि भुनगे की संख्या 5–10 प्रति बौर हो, इमिडाक्लोप्रिड का पहला छिड़काव 1 मी.ली प्रति 3 ली. पानी में (जब पुष्प

गुच्छ 7–10 सें.मी. का हो) करें। सिंथेटिक पाइरेथ्राइड्स जैसे साइपरमेथ्रिन, परमेथ्रिन, फेनवेलरेट तथा डेल्ट्रामिथ्रिन का आम के पेड़ों में छिड़काव नहीं करना चाहिए क्योंकि ये मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं तथा भुनगे में प्रतिरोधक शक्ति का विकास होता है जिससे इसे बाद में नियंत्रित करना कठिन होता है। 50 प्रतिशत से अधिक पुष्पन हो गया हो तो बागवानों को छिड़काव नहीं करने की सलाह दी जाती है क्योंकि इससे परागण क्रिया पर असर होता है जिससे कम फल बैठते हैं।

बौर का झुलसा रोग की रोकथाम के लिए परामर्श

बौर के विकास काल में झुलसा रोग का संक्रमण फूलों और अविकसित फलों के झड़ने की स्थिति उत्पन्न करता है। इस रोग का प्रकोप वायु में 80 प्रतिशत से अधिक आर्द्रता अथवा वर्षा होने पर नमी बढ़ने से अधिक होता है तथा गंभीर आर्थिक क्षति होती है। ऐसी स्थिति में मेन्कोजेब (63%) + कार्बेन्डाजिम (12%) के 0.2 प्रतिशत घोल (2.0 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करना चाहिए। शुष्क मौसम में क्षति की संभावना कम होती है।

सूचना संबंधी संपर्क हेतुः– निदेशक, भा.कृ.अनु.प.–केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ (0522–2841022 / 0522–2841172) से सम्पर्क करें।